खुले प्रश्नों के खुले जवाब

अलका तिवारी

बच्चों में चिन्तन प्रक्रिया शुरू करने, तर्क और विश्लेषण का कौशल विकसित करने के लिए भाषा एक मज़बूत औज़ार की तरह इस्तेमाल होती है। अगर भाषा के इस कमाल के लिए कहानी, कविता, घटनाएँ, बच्चों के निजी अनुभव जैसे समुचित सन्दर्भ हों तो यह प्रक्रिया और भी सजीव हो जाती है। लेखिका ने बच्चों के साथ पाठ्यपुस्तक की कुछ कहानियाँ और कुछ पाठ्येतर सामग्री लेकर उनसे संवाद का अपना कक्षा अनुभव प्रस्तुत किया है। सं.

कई साथियों के साथ लगातार संवाद, कुछ ख़ास तरह के अध्ययन और बच्चों के अवलोकन से मन में भाषा सीखने की सैद्धान्तिक प्रक्रिया को लेकर एक स्वीकार्यता बनी। यह स्वीकार्यता कि पढ़ना-लिखना सीखने की प्रक्रिया बच्चों के लिए मज़ेदार और अर्थपूर्ण होनी ही चाहिए। बच्चे पठन के दौरान आई बातों को अपने अनुभवों से जोड़कर देख पाएँ और उनके बारे में सोच-विचार कर पाएँ। साथ ही पठन की प्रक्रिया बच्चों के मन-मस्तिष्क में लिखे हुए शब्द-चित्रों के कुछ अर्थ गढ़ पाने में इस रूप में मददगार साबित हो कि बच्चे लिखे हुए शब्दों से अपने पूर्व अनुभवों को जोड़ते हुए कुछ नए विचार बना पाएँ। इसी के साथ यह भी समझी कि बच्चों के साथ लिखे हुए सन्दर्भों पर थोड़ा ठहरकर चर्चा की जाए तो भाषा सीखने की प्रक्रिया बच्चों में चिन्तन को शुरू करने में मददगार साबित होती है। ऐसे सतत अवसर बच्चों को रचनात्मक सोचने की दिशा में ले जा पाने में भी भूमिका अदा करते से नज़र आते हैं। हालाँकि यह सब बहुत धैर्य, खुलेपन और सजग होकर बच्चों के साथ काम की माँग करता है।

पिछले दिनों बच्चों के साथ कक्षा में भाषा सीखने-सिखाने के कार्य से जुड़कर इस विचार को और भी क़रीब से महसूस कर पाने का मौक़ा मिला। इस लेख में कक्षा 2, 3, 4 के बच्चों के साथ कुछ कहानियों और वर्कशीट (क्रियात्मक चित्रों) पर किए कामों के अनुभवों के कुछ अंश साझा कर रही हूँ।

टीला, डाकू और चोर

कक्षा 2 में 'चिड़िया और डाकू' कहानी सुनाने के बाद जब बच्चों से चर्चा की शुरुआत की गई तो उनके विचार इस प्रकार थे :

आशीष ने टीले के बारे में बताया, "जो ऊँची जगह होती है, उसे टीला कहते हैं। उसपर चढ़कर सारा गाँव साफ़-साफ़ दिखता है लेकिन टीला पहाड़ से कम ऊँचा होता है!"

इसी कहानी में आए 'डाकू' शब्द पर बातचीत हुई तो दिलख़ुश ने एक कहानी के रूप में अपना अनुभव सुनाते हुए बताया कि उसने सुना है उसकी दादी के गाँव में डाकू आए थे, उनके पास बन्दूकें थीं। पहले गोलियाँ चलाकर उन्होंने सबको डराया फिर कई घरों से सामान लूटकर चले गए।

राजवीर ने कहा, "दीदी, मेरे पापा मेले में गए थे। किसी ने उनकी जेब काट ली थी और सारे पैसे ले लिए।" इसपर मैंने यह सवाल समूह के सामने रखा कि राजवीर ने जो बात बताई, उन लोगों को हम क्या कहेंगे? सभी बच्चे एक साथ बोल पड़े, "दीदी चोर!"

मैंने पूछा, "हम किसके बारे में बात कर रहे थे?", "डाकुओं के बारे में।" फिर मैंने बच्चों से डाकू और चोर के बारे में कुछ और जानना चाहा तो विजय ने बताया, "दीदी, चोर तो चुपके से चीज़ें चुराते हैं, पीछे से, कि हमें पता ही नहीं चलता। पर डाकू तो सामने आकर सबकुछ करते हैं!" कमलेश ने जोड़ा, "डाकू तौलिए से हमेशा अपना मुँह ढँके रहते हैं, ताकि कोई उन्हें जल्दी से पहचान न पाए।" पायल ने कहा, "दीदी, चोर तो बस सामान ही चुराते हैं, पर डाकुओं के पास हथियार भी होते हैं और वो तो लोगों को मार भी देते हैं!" अजय ने बताया, "दीदी, सर कहते हैं हमारी कक्षा में कुछ कामचोर भी हैं!" सब हँस पड़े। इसपर मैंने बच्चों से पूछा, "चोर और कामचोर अलग-अलग बात हैं क्या?" विशाल बोला, "जो अपना काम न करे वो कामचोर।" बात पूरी करते हुए गायत्री बोली, "कामचोर अपना नुक़सान करता है और चोर दूसरों का!"

कौवा, साँप और सोने का हार

कक्षा 3 में ही, *पंचतंत्र* की कहानी 'कौवा और सोने का हार' का वीडियो बच्चों को दिखाया। वीडियो का कुछ हिस्सा देखने के बाद प्रश्नों के माध्यम से इस कहानी के घटनाक्रम के बारे में बच्चों से जानने का प्रयास किया गया। "कौवा हार लेकर कहाँ जा रहा होगा?", यह पूछने पर बच्चों की प्रतिक्रिया कुछ इस तरह रही :

धनराज : "अपने बच्चों के लिए।"

अजय : "कौवी के लिए।"

कमलेश : "बेचने के लिए।"

सना : "खेलने के लिए।"

राधा : "घर में सजाने के लिए।"

तनवीर : "अपने दोस्त को देने के लिए।"

विशाल : "इसके बदले में खाने की कुछ चीज़ लाने के लिए।"

कौवा और सोने का हार

कौवी ने अण्डे दिए। कौवे के अण्डों को उसी पेड़ के नीचे बने बिल में रहने वाले साँप ने खा लिया। इससे कौवे का परिवार बहुत दुखी हुआ। कौवे ने उस साँप से छुटकारा पाने के लिए एक उपाय सोचा। तालाब पर रानी रोज़ नहाने आती थी। एक दिन कौवा उस रानी का हार अपनी चोंच में लेकर धीरे-धीरे उड़ने लगा। उसे पकड़ने के लिए रानी के सिपाही पीछे-पीछे भागे। कौवे ने हार लाकर साँप के बिल में डाल दिया। सिपाहियों ने साँप को मारकर हार बिल से बाहर निकाल लिया।

कोमल अभी तक सोच रही थी कि हार तो कौवे के किसी काम का नहीं है, पर इससे कौवा कुछ अलग करने वाला है! इसपर पायल ने पूछा, "कौवा चुपके से भी तो हार ले जा सकता था, तो सिपाही उसे मारने के लिए उसके पीछे नहीं आते।" पायल की बात सुनकर दिलख़ुश ने कहा, "दीदी, कौवा पागल होता है।" मैंने जानना चाहा कि उन्हें ऐसा क्यों लगता है। इसपर धनराज बोला, "तभी दीदी वो गन्दी चीज़ें ही खाता है, गोबर में चोंच घुसाता रहता है।" इस बातचीत से मैं अन्दाज़ा लगा पा रही थी कि उनका मतलब था, कौवा बेवकूफ़ होता है! तभी विजय बोल पड़ा।

लेकिन कहानी का पूरा वीडियो देखने के बाद कौवे के हार लाने के बारे में आशीष, कोमल, विशाल आदि बच्चों ने मिलकर यह

प्रतिक्रिया दी कि कौवा साँप को मारने के लिए हार लेने गया था। उसने हार लाकर साँप के बिल में डाल दिया और सिपाही ने हार लेने के लिए साँप को मार दिया। इससे कौवे की परेशानी दूर हो गई। अब वह आराम से रह सकता था। किरन ने पायल के सवाल पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा, "अगर कौवा सिपाहियों के सामने हार लेकर नहीं उड़ता, तो वे साँप के बिल तक कैसे पहुँचते? और फिर साँप कैसे मरता? साँप नहीं मरता तो कौवे को हार उठाकर लाने से क्या फ़ायदा होता!" मनीष ने कहा कि इस कहानी में उसे साँप बहुत बुरा लगा, क्योंकि उसने कौवे के परिवार को बहुत सताया था। राधा ने कहा कि इस कहानी में उसे कौवे का व्यवहार अच्छा लगा क्योंकि उसने अपने दुख को दूर करने के लिए इतना सोचा! तभी तो ये तरीक़ा ढूँढ़ पाया, नहीं तो साँप कभी मरता! इसपर अमन का कहना था कि साँप कौवे के अण्डे नहीं खाता तो कौवा कभी साँप को मारने की नहीं सोचता और फिर उनके परिवार मज़े से दोस्ती के साथ रहते और दोनों मिलकर खाने के लिए कुछ ढूँढ़ने जाते। इस बात को आगे बढ़ाते हुए तनवीर ने कहा, "अगर कौवा दिमाग़ लगाता तो वो पेड़ की और ऊँची डाली पर जाकर घोंसला बना लेता!" इसपर सना ने कहा, "साँप तो वहाँ भी आ जाता फिर तो उसे हमेशा के लिए अपना घोंसला छोड़कर कहीं और जाना पड़ता, घोंसला बनाने के लिए अच्छी जगह ढूँढ़नी पड़ती, और फिर से मेहनत करनी पड़ती अपना नया घर बनाने के लिए। घर बनाना इतना आसान थोड़े न होता है!" मैंने बच्चों के बीच एक सवाल रखा कि आप साँप के साथ क्या करते? इसपर अजय ने कहा, "मैं तो उसे पत्थर मार-मार कर मार डालता!" आशीष कुछ सोचकर बोला कि वह साँप के बिल के पास बहुत सारी आग लगा देता जिससे साँप डरकर बिल छोड़ भाग जाता!

बिल्ली, चील और चिड़ियों का झुण्ड

कक्षा 4 के बच्चों को *पंचतंत्र* की कहानी 'चालाक बिल्ली' का वीडियो दिखाकर जब उनसे इस कहानी पर अपनी राय ज़ाहिर करने को कहा गया तो उन्होंने अपनी राय कुछ यूँ व्यक्त की :

- मीनाक्षी : "दीदी, मुझे ये कहानी अच्छी नहीं लगी क्योंकि इस कहानी में चील को उस अपराध की सज़ा भुगतनी पड़ी, जिसे करने के बारे में वह कभी सोच भी नहीं सकती थी। और चिड़ियों के समूह में से, किसी भी चिड़िया ने चील को सज़ा देने से पहले एक बार भी ये ज़रूरी नहीं समझा कि चील से

चालाक बिल्ली

जंगल में चिड़ियों का एक झुण्ड रहता था। उसी झुण्ड के पास एक बूढ़ी चील रहती थी। चील अपनी अवस्था के कारण शिकार नहीं कर पाती थी, इसलिए भूखी रह जाती थी। चिड़ियों को अनाज लेने के लिए जंगल से दूर जाना पड़ता था। इसलिए चिड़ियों के झुण्ड ने अपने भोजन में से थोड़ा-थोड़ा हिस्सा चील को देकर उसकी मदद करने का सोचा। बदले में चील ने भी सोचा कि चिड़ियाँ जब दाना लेने जाएँगी तो वह उन सबके बच्चों की देखभाल करेगी। तभी एक दिन एक बिल्ली आती है, और अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से चील को भरोसा दिलाती है कि वह एक शाकाहारी बिल्ली है और उससे दोस्ती करना चाहती है। पहले चील उसपर थोड़ा सन्देह करती है, पर फिर उसे बिल्ली की बातों पर यक़ीन हो जाता है। इसका फ़ायदा उठाकर बिल्ली धीरे-धीरे कई सारे बच्चे चट कर जाती है। जंगल में एक जगह चिड़ियों को उन बच्चों की हड्डियाँ दिखती हैं, चिड़ियों का सारा झुण्ड ग़ुस्से में आकर उस चील को मार डालता है।

सही कारण जानने की कोशिश की जाए या उसे एक बार अपनी बात कहने का मौक़ा दिया जाए। उसकी बात सुने बिना ही उसे ऐसे मार दिया। ये भी नहीं सोचा कि वह चील पिछले कितने समय से उन सभी के बच्चों की देखभाल कितने ध्यान से कर रही थी, और पहले तो उनके बच्चों को कभी कोई नुक़सान नहीं पहुँचा था! उसके व्यवहार के बारे में विचार किए बिना, कारण जाने बिना ही उसे सज़ा दे दी गई। ये तो ठीक नहीं था!"

- कक्षा 3 की निशा : "दीदी, हमें बिल्ली वैसे तो बुरी ही लगी, क्योंकि इतने छोटे बच्चों को भी चट कर गई। वो तो कितने मासूम थे! पर जंगल में और कुछ भी तो नहीं था बिल्ली के खाने के लिए। घरों में भी उसे दूध या रोटी कुछ भी नहीं मिलता था खाने के लिए, और घास तो उसे अच्छी नहीं लगती होगी। तो उसके पास कोई और रास्ता भी तो नहीं था!" और यह कहते-कहते वह उदास भी होने लगती है।

- वरुण : "इस कहानी में चतुराई देखी जाए तो बिल्ली ने सब जगह ख़ूब दिमाग़ का इस्तेमाल किया, लेकिन उसने अपनी चालाकी से चिड़िया के बच्चों को खा लिया, जिसका ज़िम्मेदार चील को समझा गया और बिल्ली के हिस्से की सज़ा उसे मिली। और चिड़ियों ने चील की बात सुने बिना ही उसे सज़ा दे डाली। उनका ये निर्णय ग़लत था क्योंकि सही निर्णय तो तभी होता, जब कम-से-कम एक बार चिड़ियाँ चील से अपने बच्चों को मारने की वजह तो पूछ लेतीं।"

- शुभम : "बिल्ली बहुत चालाक तो थी! उसने बच्चों को मारा, इसलिए वह हमें बुरी भी लगती है। लेकिन उसे भी तो अपना पेट भरना था, इसलिए अपनी भूख मिटाने के लिए उसे ये सब करना पड़ा। चील तो बिल्ली के बारे में पहले से ही जानती थी कि उसका व्यवहार कैसा था, फिर उसपर भरोसा करने से पहले ये तो सोचना चाहिए था कि किसी भी इंसान का व्यवहार एकदम से कैसे बदल सकता है! इस बात के लिए उसे सज़ा मिली। और चिड़ियों ने बिना समझदारी के ग़ुस्से में आकर निर्णय कर दिया। ग़ुस्से में तो कभी कोई भी निर्णय ठीक नहीं हो सकता!"

- चेतना : "मुझे चील का व्यवहार बहुत अच्छा लगा क्योंकि वह कितनी ज़िम्मेदारी से सभी चिड़ियों के बच्चों की देखभाल करती थी, तभी तो चिड़ियाँ अपना खाना ढूँढ़ने बेफ़िक्र होकर जा पाती थीं। बदले में सभी चिड़ियों ने अपने खाने में से थोड़ा-थोड़ा हिस्सा चील को देकर उसकी मदद की थी। इससे दोनों को एक दूसरे से बराबर मदद मिल रही थी।"

- प्रिया : "दीदी, चील बहुत अच्छी थी। वह दिनभर बच्चों का ध्यान रखती और कहीं भी नहीं जाती थी। उसका मन करता तो वो सो भी सकती थी, चिड़ियाँ थोड़े न आतीं उसे देखने के लिए। पर उसने अपना काम पूरी ईमानदारी से किया। बिल्ली को भूख लगी थी, इसलिए उसने बच्चों को खाया। लेकिन अपनी भूख मिटाने के लिए उसने चील से बार-बार कितना झूठ बोला, उसे धोखा दिया, यह बहुत बुरा लगा। वह सीधे भी तो चील से कह सकती थी कि मुझे कुछ बच्चे दे दो खाने के लिए। पर पता नहीं तब चील उसे बच्चे देती या नहीं। शायद वो भूखी रह जाती।"

- अर्चना : "चिड़ियों ने चील को देखकर अपने-अपने खाने में से थोड़ा-थोड़ा

हिस्सा देकर उसकी मदद की। चूँकि वह इतनी बूढ़ी हो गई थी कि अपने लिए शिकार करके नहीं ला सकती थी। फ़्री में खाना खाने की बजाय चील ने उनके बच्चों की देखभाल करने में मदद की, तभी तो चिड़ियाँ खाना ला पाती थीं। लेकिन बिल्ली किसी मरे हुए जानवर को खाकर भी तो अपना पेट भर सकती थी या चील से सच भी तो बोल सकती थी कि मैं भूखी हूँ। शायद चील उसे खाना ढूँढ़ने में मदद करती, या चिड़ियाँ भी उसे अपने खाने में से कुछ हिस्सा दे सकती थीं।"

यह सब बातचीत करने के बाद सभी बच्चों ने कहानी को अपने शब्दों में लिखने का काम भी किया। सभी बच्चों ने लिखने की कोशिश की और वे काफ़ी हद तक लिख भी पाए।

समूह में पढ़ना

सभी कक्षाओं में बच्चे समूहों में किताबों को पढ़ते हैं। समूह में पढ़ने के लिए किताबों का चयन वे ख़ुद ही करते हैं। कई बार समूह में पढ़ने की प्रक्रिया भी वे तय करते हैं– जैसे कभी एक समूह में कुछ बच्चे व्यक्तिगत रूप से भी पढ़ते हैं, जबकि उसी समूह के अन्य सदस्य किसी एक किताब को पढ़ रहे होते हैं। ऐसे ही एक समूह पठन के दौरान, अपनी पसन्द की पुस्तक पढ़ने के बाद शुभम ने बताया कि वो

इस कहानी को सुनाना चाहता है और इसके बारे में कुछ बताना चाहता है क्योंकि यह कहानी उसे थोड़ी ख़ास लगी है! ख़ैर, कहानी सुनाने के बाद शुभम ने अपनी बात को जिस शैली में धारा प्रवाह के साथ साझा किया वह मुझे भी कुछ मायनों में ख़ास लगा।

- शुभम : "इस कहानी में चोट लगे तोते की देखभाल माधव और काजल ने बड़ी ख़ास तरह से की। वैसे तो हम सभी को जीवों की देखभाल करनी ही चाहिए, पर काजल और माधव ने इस बात का बिलकुल ध्यान रखा कि तोता उनसे डर रहा है, और डर के मारे भागने की वजह से उसे और ज़्यादा चोट लग सकती है। इसलिए उन्होंने इस बात का पूरा ध्यान रखा कि तोता फिर से कोई डर महसूस न करे। वे चुपके से तोते की ज़रूरत की चीज़ें रखने के लिए उसके पास जाते, और छुपकर तोते को देखते रहते ताकि ज़रूरत पड़ने पर उसकी मदद कर पाएँ। ठीक होने और कई दिनों तक साथ रहने के कारण वे तोते से प्यार करने लगे थे। पर शायद वे उसे सच

में प्यार कर पाए थे, तभी तो ये महसूस कर रहे थे कि उस तोते के लिए सबसे सही जगह जंगल है। क्योंकि वहीं, वह अपनी मर्ज़ी का जीवन जी सकेगा, और पूरी तरह ख़ुश महसूस करेगा, इसलिए वे उसे जंगल में छोड़ने की बात सोच पाए। लेकिन हम होते तो ऐसे सोचते कि चलो इसे पाल लेते हैं, हम अपना फ़ायदा देखते। लेकिन पिंजरे में कोई भी जीव कैसे ख़ुश रह सकता है, चाहे हम उसे कितना ही प्यार करें, आज़ादी तो सबको चाहिए न! शायद माधव और काजल को यह बात पहले से पता थी...'' अपनी बात पूरी करके वह लम्बी साँस लेता है और उसके चेहरे पर आत्मविश्वास के साथ मुस्कुराहट तैर जाती है...

बच्चों के अपने हाइकु

कक्षा 3 के साथ इसी तरह एक दिन बच्चों से चित्र दिखाकर बातचीत की तो बच्चों ने चित्रों पर अपने विचार साझा किए। फिर उन्हें दूध-*जलेबी जग्गग्गा* किताब से कुछ कविताएँ दीं, इन कविताओं को पढ़ने के बाद बच्चों ने इसपर अपने अनुभव सुनाए और कहा, ''दीदी, ये बातें

तो एक छोटी कविता जैसी लगती हैं!'' बातचीत और पठन के फलस्वरूप वे यह महसूस कर पा रहे थे कि चित्रों पर कही गई बात किसी वाक्य के रूप में ही थी, लेकिन उनमें कोई लय भी है। उन्होंने चित्रों पर लिखी पंक्तियों को पढ़ा

और बताया कि इन पंक्तियों को लिखने वाले ने काफ़ी सोचा होगा इस चित्र के बारे में! ऐसी कोशिश स्वयं बताते समय उन्होंने नहीं की थी। बातचीत के बाद बच्चों से सहमति लेते हुए उन्हें कुछ चित्र बने हुए कार्यपत्रक दिए गए व कहा गया कि वे भी उन चित्रों पर कुछ सोचकर लिखने की कोशिश कर सकते हैं। चित्रों पर बच्चों की प्रतिक्रियाएँ कुछ इस तरह देखने को मिलीं :

- प्रिया : ''मूँछें हैं इसकी मतवाली, फिर भी हमसे डरती है!''
- अजय : ''चूज़ा और बकरी में हुई लड़ाई, लोहे से बनती है काली कढ़ाई!''
- शुभम : ''करता हूँ मैं भाऊँ-भाऊँ, फिर भी दिनभर मार खाऊँ!''
- कुलदीप : ''बॉल ज़ोर से आया, मैंने शॉट लगाया!''
- महेन्द्र :

''हूँ मैं एक प्यारी-सी बिल्ली, है मुझे फूलों से प्यार

हूँ मैं एक छोटी-सी गुड़िया, है मुझे खिलौनों से प्यार

हूँ मैं एक नन्ही-सी बच्ची, है मुझे साइकिल से प्यार

हूँ मैं एक छोटी-सी मछली, है मुझे समुद्र से प्यार

हूँ मैं एक ख़रगोश, है मुझे गाजर से प्यार

मैं हूँ एक गिलहरी, है मुझे अपने बच्चे से प्यार।"

कक्षा प्रक्रियाएँ

बच्चों के साथ काम की प्रक्रिया की बात की जाए तो काम के उद्देश्य व बच्चों की आवश्यकतानुसार बच्चे समूह व उपसमूह दोनों ही प्रक्रियाओं के तहत काम करते हैं। पाठ्यपुस्तक के अलावा पठन हेतु अन्य पुस्तकों से बच्चों की आवश्यकतानुसार गीत, कविताएँ, कहानियाँ आदि बच्चों के साथ साझा करने की कोशिश रहती है, ताकि पठन सामग्री में मिलने वाली विविधता से बच्चों का आमना-सामना सतत प्रक्रिया के रूप में होता रहे। साथ ही यह मक़सद भी होता है कि पठन सामग्री उन्हें अपनी ओर आकर्षित कर पाए और इससे सीखने में आनन्द भी वे महसूस कर पाएँ। बच्चे पुस्तकों से कहानियों, चित्र कथाओं, बाल गीतों आदि का पठन करते हैं। पुस्तकों की जटिलता के क्रम में काम को ठीक से व्यवस्थित करने हेतु उपसमूह बनाए तो जाते हैं, पर बच्चे के लिए यह पूरी तरह खुला होता है कि अपनी रुचि व ज़रूरत के अनुसार दूसरे समूह में जाकर भी अपनी मनपसन्द किताब चुनकर पढ़ सकता है। कोई कहानी बच्चों को पसन्द आ जाए तो वे एक ही कहानी को कई बार भी पढ़ना चाहते हैं। पर उनसे बात की जाए तो वे ये भी समझ पाते हैं कि ऐसा करते रहने से उन्हें दूसरी किताबों में छुपी कहानियों के बारे में कैसे पता चल पाएगा, इसलिए और किताबें पढ़ना भी उतना ही ज़रूरी है। पढ़ते समय कुछ बच्चे स्वतंत्र रूप से पढ़ पाते हैं, कुछ धीरे-धीरे और एक से अधिक बार पढ़ते हैं। कुछ बच्चे अकेले किसी कोने में बैठकर, तो कुछ सीढ़ियों पर जाकर पढ़ना पसन्द करते हैं, वहीं कुछ अपने दोस्तों के साथ मिलकर उनसे बातचीत करते हुए। कुछ बच्चे पढ़कर समूह में कहानियाँ सुनाना पसन्द करते हैं, तो कुछ उन कहानियों के बारे में अपनी बात कहना पसन्द करते हैं। कुछ बच्चे पठन के आधार पर विषयवस्तु पर प्रश्न तैयार करके लाते हैं और समूह में पूछते हैं, तो दूसरे बच्चे उन प्रश्नों पर प्रतिक्रिया देने में रुचि व उत्साह दिखाते हैं। कोशिश बस यही रहती है कि बच्चे ज़्यादा-से-ज़्यादा अपनी बात को ख़ुद के शब्दों में कह पाएँ। कहानी या अन्य विषयवस्तुओं पर काम करते समय ये प्रयास ज़रूर रहता है कि जो भी सन्दर्भ काम में लिया गया है उसकी मदद से ठीक-ठाक स्वरूप में बच्चों के बीच एक संवाद ज़रूर हो पाए।

जो मैंने पाया

बच्चों के साथ रहे ये अनुभव फिर से मुझे इस विचार की गहराई तक जाने के लिए मजबूर करते हैं कि चिन्तन प्रक्रिया में भाषा किस तरह एक ज़रूरी हथियार की भूमिका निभा पाती है। एक अच्छा सन्दर्भ (कहानी, घटना, बच्चों के अपने अनुभव, कविता) बच्चों के साथ संवाद के कई तरह के आयाम खोल पाता है। यह बात इस मायने में भी महत्त्वपूर्ण लगती है कि अलग-अलग सन्दर्भों का पठन और उनपर बातचीत लिखित शब्दों के विभिन्न सन्दर्भों में अर्थ भरकर उसे जीवन से ऐसे जोड़ देते हैं कि लगता है वे शब्दों को सुनने भर से ही उन्हें महसूस करने लगते हैं। मसलन, किसी पुराने गीत की एक पंक्ति सुनकर ही हम बीते समय को जीकर वापस आज में लौट आते हैं। कभी किसी अच्छी कहानी को पढ़कर हम कैसे जीवन के घटनाक्रम को एक बार फिर से जी उठते हैं!

लिखित प्रतीकों का तब तक कोई अर्थ नहीं होता जब तक पाठक इन प्रतीकों को अर्थ नहीं देता। तभी हम देखते हैं कि कक्षाओं में बच्चे

इन प्रतीकों का उच्चारण करना सीख जाते हैं पर पूरा वाक्य या अनुच्छेद पढ़ लेने पर भी बता नहीं पाते कि पढ़ा क्या है। यह अर्थ बनाने की प्रक्रिया सीखनी पढ़ती है और इस तरह लगातार अलग-अलग घटनाक्रमों की यात्रा करते हुए बच्चे यह सीखते हैं और शब्दों के अर्थ धीरे-धीरे समृद्ध होते चले जाते हैं।

अलग-अलग मज़ेदार सन्दर्भों को सुनकर, पढ़कर और उनपर संवाद करने से बच्चे परिस्थितियों के बारे में अन्दाज़ा लगाते हैं, अनुमान से घटनाएँ गढ़ते हैं, घटनाओं के क्रम में सम्बन्ध देखने की कोशिश करते हैं, कार्य-कारणों के आधार पर सटीक तर्क करने की दिशा में सोचते हैं और उनके अनुभव के आधार पर उनकी व्याख्या करते हैं। जैसे– निशा ने कहानी की पात्र 'बिल्ली' के बारे में उसे पसन्द न करने की बात भी सहजता के साथ कही, और नापसन्द होने के बावजूद उसके पक्ष को ध्यान से देखने की कोशिश की कि किस तरह उन बच्चों को खाकर अपनी भूख मिटाना उस बिल्ली के लिए आख़िरी विकल्प रहा होगा।

बातचीत की इस प्रक्रिया में किसी विचार को लेकर उसे उचित-अनुचित के रूप में स्वीकारने या कहें उसे सही-ग़लत के रूप में निर्धारित कर देने के बीच में जो सब घट रहा होता है वह सबसे महत्त्वपूर्ण लगता है। इसी तरह वरुण की बात, "बिल्ली ने सब जगह ख़ूब दिमाग़ का इस्तेमाल किया, लेकिन उसने अपनी चालाकी से चिड़िया के बच्चों को खा लिया, जिसका ज़िम्मेदार चील को समझा गया और बिल्ली के हिस्से की सज़ा उसे मिली। और चिड़ियों ने चील की बात सुने बिना ही उसे सज़ा दे डाली, उनका ये निर्णय ग़लत था क्योंकि सही निर्णय तो तभी होता, जब कम-से-कम एक बार चिड़ियाँ चील से अपने बच्चों को मारने की वजह तो पूछ लेतीं", भी उतनी ही तर्कपूर्ण है। यहाँ गहराई से महसूस किया जा सकता है कि बच्चों के साथ इस तरह के संवाद सुनी बात, लिखित सन्दर्भ और उनके जीवन अनुभवों के बीच एक ऐसे लचीले पुल की तरह काम करते हैं, जहाँ बच्चे गिरते, सँभलते, थोड़ा सहारा लेते शब्दों से खेलने के लगातार प्रयास करते हैं। और अलग परिस्थितियों के अपने-अपने लिए नए परिदृश्य खोजने की उस कोशिश में चले जाते हैं, जहाँ से वे अपने विचारों को मनचाहे रूप-रंग का आकार देने की चाह में जुटकर चिन्तनशील होते नज़र आते हैं। यहाँ से सोच-विचार के कौशल को ज़रूरतभर खाद-पानी मिलते रहने का ज़रिया खुलता-सा नज़र आता है।

यह भी कि अकसर कुछ बच्चों की पहल से अन्य बच्चों के आत्मविश्वास को भी एक ख़ास तरह का सम्बल मिल रहा होता है, और मुझे लगता है मेरी कक्षा के कई बच्चों में सोच-विचार कर पाने की एक शैली धीरे-धीरे आकार ले रही है, जिससे वे सुने हुए विचारों के बारे में सहमति या असहमति की कुछ पर्याप्त वजहें या कहें, अपने स्तर के तर्क देख पाते हैं, और उन्हें उतनी ही सहजता के साथ अपना पक्ष रखते समय साझा भी कर पाते हैं। इन बच्चों के अपनी बात कह पाने के इस अन्दाज़ से मुझे लगता है कि वे परिस्थितियों और विकल्पों का चुनाव और निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी करने के दौरान एक तरह की सजगता के साथ अपनी भूमिका अदा कर पाने की क्षमता को हासिल करने की दिशा में बढ़ रहे हैं।

अलका तिवारी ने शिक्षा में अपने काम की शुरुआत ज़िला बारां, राजस्थान में दिगंतर संस्था द्वारा चलाए जा रहे सहरिया समुदाय के बच्चों से जुड़े सन्दर्भशाला प्रोजेक्ट से की। फिर उन्होंने बोध शिक्षा समिति में विज्ञान शिक्षक के रूप में कार्य किया। वे 2012 से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में विज्ञान की टीचर एजुकेटर के रूप में जुड़ी हैं। अलका 2019 से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के टोंक स्कूल में विज्ञान और भाषा के शिक्षक के रूप में कार्य कर रही हैं। उन्हें शुरुआती कक्षाओं के बच्चों के साथ काम करना अच्छा लगता है।
सम्पर्क : alka.tiwari@azimpremjifoundation.org